International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2, February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बिहार के लोक गीत की परम्परायें

डॉ0 रूबी कुमारी
एल0एन0एम0यु0 दरभंगा

भारत के प्रत्येक प्रदेश में संगीत की विधायों, शैलियों, और परंपराओं का वहाँ के स्थानीय प्रभाव के अनुसार विकास हुआ। बिहार में भी संगीत की समुन्नत परंपरा रही । बिहार अन्य कलाओं की तरह संगीत की भी साधना एवं आविष्कार की भूमि रही है। संगीत को मुक्ति का मार्ग घोषित करने वाले बिहार के ही एक प्राचीन ऋषि याज्ञवल्क्य थे। जिनकी घोषणाओं एवं धार्मिक निष्ठाओं के कारण ही संगीत की शास्त्रीयता दीर्घकाल से सुरक्षित रही। (1)

जहाँ जीवन है, वहाँ संगीत है। जहाँ संगीत है वही जीवन के राग हैं कला के बिना जीवन के सुरमयी रंग कहाँ। सुख हो या दुख, हर्ष हो या विषाद। सबको अभिव्यक्त कने के लिये हर काल खंड लोक संगीत की धारा बहती आ रही है। बिहार में शस्त्रीय संगीत की परंपराओं कें अतिरिक्त लोक संगीत की भी विशिष्ट परंपरा रही।

लोक गीत, लोक साहित्य का प्रमुख अंग है। मानव जीवन के साथ लोक गीत अनवरत सम्बद्ध होते है। भावना, संवेदनशीलता, हृदयस्पर्शित आदि इसके प्रमुख तत्व होते हैं, जिससे इसका निर्माण होता है। मूलतः लोक गीत भावावेग होते हैं और यह जनजन के अंतराल में जन्म जात हुआ करते हैं। इसमें बुद्धि विलास का दिग्दर्शन नही बल्कि मिटटी की सोंधीमहक होती है। लोकगीत के संबंध में महात्मा गाँधी जी ने एक बार कहा था ''लोकगीत में धरती गाती है। पहाड़ गाते हैं, नदियाँ गाती है, फसले गाती है, उत्सव और मेले, ऋतु और परंपराये गाती है।''(2) लोकगीत को अनेक विद्वानों ने पारिभाषित किया है। एक अन्य विद्वान देवेन्द्र सत्यार्थी के अनुसार ''युग युग की पीड़ा, वेदना, युग युग की हर्ष श्री रीति नीति, प्रथा गाथा, अचुक सहज रूढ़िवार्ता, भौगोलिक एवं वातावरण निर्मित सांस्कृतिक परम्पराये सभी इन स्वरों में अपने नाम, धाम, अथवा वंश का परिचय देते प्रतीत होते

है। लोक गीतों के विषय वस्तु, प्रवृति असकी शैली आदि को ध्यान में रखकर लोकसाहित्य के विद्वानों ने इसे विभिन्न वर्गो मे विभाजित किया है। बिहार के विभिन्न अंचलों में प्रचलित लोक गीतों को मूल्यांकन की दृष्टि से कर्गीकृत किया जा सकता है। अतः इसे हम निम्न वर्गो में बाँट सकते हैं:–

(1) संस्कार गीत (2) क्रिया गीत
(3) धर्मित गीत (4) कुषि गीत
(5) जाति गीत एवं (6) ऋतु गीत

बिहार प्रदेश का हर अंचल हर जिला, हर गाँव हर कस्वा, हर मुहल्ला संगीत की सुरभि से आच्छादित है। यहाँ के मिथिलाचल में ब्रज भूमि की तरह साहित्य और संगीत का अजस्त्र श्रोत रहा। इसके अतिरिक्त भोजपुर, मगध अंगिका आदि अंचल भी सांस्कृतिक सुरभि के साथ साथ सांगीतिक परम्पराओं से परिपूर्ण है।

मिथिलांचल में शास्त्रीय संगीत की परंपरा जितनी सशक्त है उतनी ही लोक संगीत की परंपराये भी। यहाँ का तिरहुत गीत अति प्राचीन है। प्रसिद्ध गीतकार जयदेव ने 12 वी शताब्दी में मिथिला की गीत परंपरा को प्रभावित एवं प्रोत्साहित किया। गीतों का चरमोत्कर्ष विद्यापति के समय दिखलाई पड़ती है। मिथिला के अमराईयों में, खेत खलिहानों में, डगर पंथ में, हर कण कण में, गोशे गोशे से संगीत की धारा फुटती रहती है। चाहे घर में बच्चे का जन्म हुआ हो, शादी विवाह का मांगलिक अवसर हो, चाहे बीज बोना हो या फसल काटना हो चक्की पीसना हो या देव पूजन की शुभ बेला हो या पर्व–त्योहारों उत्सवो की घड़ी हो सभी संगीत की रस से परिपूर्ण होते है। सभी का समापन लोक गीतों के द्वारा होता है। सर ऐलविन ने अपनी पृस्तक में एक करमा को उद्घृत किया है जिसका अर्थ है–यदि तुम मेरे जीवन की कहानी जानना चाहते हो तो मेरे गीत को सुनो''(3) । यहाँ के लगभग अधिकांश सांगितिक परंपराओ में विद्यापति के गीत गाये जाते हैं। इस अंचल में प्रचलित लोकगीत यथा– परिछनी, स्वयंबर, कोहबर, महेशवाणी, नचारी, सोहर, लगनी, समदाऊन, बटगमनी, जँतसार, झुमर, गोसाउनि, ब्राहण गीत आदि है। मैथिली बोली बहुत मीठी होती है। इसलिये इस अंचल के गीत बहुत कर्णप्रिय एवं मधुर होते है। इस अंचल में प्रचलित सोहर–

''पहिल प्रण सिया ठानल, सेहो विधना पूर केलनि रे

ललना रे माँगि लेल अयोध्या सन राज जनकपुर नैहर रे''। (4)

भोजपुर की सांगीतिक परम्पराये भी काफी उननत एंव सशक्त है। भोजपुरी भारत बर्ष में सबसे अधिक जन समुदाय के द्वारा व्यवहार में लायी जाने वाली भाषा है। भारत बर्ष के विभिन्न राज्यों में यह बोली जाने के अतिरिक्त विश्व के अन्य देशो यथा मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम ब्रिटिश गाइना (गुआना) आदि देशो में भी मातृभाषा के रूप में लाखो लोगो द्वारा बोली जाती है। (5) ये अंचल भी संगीतिक परम्पराओं से आच्छादित है। यहाँ भी तमाम लोक परम्परायें लोक गीतों के द्वारा ही सम्पादित होते है। इस इलाके के गीत सरस एवं हृदय स्पर्शी होते है। उदहारण स्वरूप इस अंचल में प्रचलित रोपनी (कृषक) गीत की दो पंक्तियाँः—

धनवा रोपे लगली गोरिया निहारी।
निहुरी निहुरी ए निहुरी निहुरी

''नेग गीत'':—

दादी के जनमल कवन फुआ फुआ झालरि परिछहु हो।
आजु हमरा बालक के मुंडन, नेग रउरा मांगहु हो।

मगध क्षेत्र की संस्कृति काफी उत्कृष्ट है। यहाँ की सांस्कृतिक गतिविधियाँ काफी विशाल है। एवं इस अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीत की अपनी अनूठी विशेषताये। हैं, भावो की सुकमारिता एवं काव्य की मनोहरता की दृष्टि से इस क्षेत्र के लोक गीत उच्च कोटि के है।

बसंत का उल्लास, बरसात के हिडोंले, विरह के गीत, सास पुतोहु का कलह आदि हदय ग्राही वर्णन इस क्षेत्र के गीतो में पाया जाता है। इस क्षेत्र के छठ के गीत विशेष महत्व के होते है। इस अचल में प्रचलित खेलवना लोकगीतः—

आँगन में नींबू लगहे मोरे लाल
जब मोरे बबुआ दादा पुकारे
दादी से नेग दिलईह, हरे मेरे लाल।''

अंगिका क्षेत्र की सांगीतिक परम्पराये भी काफी उत्कृष्ट है। यहाँ भी भ्न्नि भिन्न लोक परम्पराओं के अवसर पर विभिन्न प्रकार के लोक गीत गाये जाते है। यहाँ के लोक गीत प्रायः उत्तमविचार से युक्त प्रेरणादायक एवं बहुत ही प्रभावकारी होते है। मानव के हर क्रिया

कलापो में संस्कार गीत, प्रकृति गीत, व्रत त्योहार के गीत, देवी देवताओं के गीत, झूमर आदि अनेकानेक गीत गाये जाते है। इस क्षेत्र में प्रचलित भक्तिगीत ''

भगता के अँगना चानन केर गछिया।
वही ठाढ़ि भेल कुलदेवता गोसाँय है।''

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि बिहार में लोकगीतो की समृद्ध एवं सशक्त परम्पराये रही है। यहाँ के विभिन्न अंचलों में लोक संगीत का पर्याप्त भंडार है। जरूरत है इसे संरक्षित एवं संबर्धित करने की।

संदर्य ग्रंथ सूचीः–

(1) सिंह गजेन्द्र ना०– बिहार की संगीत परम्परा, पृ०सं०–18
(2) संगीत मासिक पत्रिका, लोक संगीत अंक
(3) सिन्हा, वीणा–''मगही लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' पृ०सं०–85
(4) देवी, कामेश्वरी– मिथिला संस्कार गीत, पृ०–17
(5) मो० ग्रा० गी०– डब्लू० जी० आर्चर, पृ०–1993